Sanskritik aur Samajik Anusandhan
www.shodhjournal.com
ISSN: 2582-5852
Received: 26-10-2021, Accepted: 11-11-2021, Published: 27-11-2021
Volume 2, Issue 2, 2021, Page No. 58-60

वर्ग उन्मूलन संबंधी संकल्पना और डॉ. लोहिया के विचार

अखिलेश त्रिपाठी
ईश्वरशरण पी. जी. कॉलेज, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
वर्गों में समाज का विभाजन और विभिन्न वर्गों के बीच चलने वाला सतत संघर्ष ऐसे स्तर पर चला गया था कि प्रत्येक उत्पादक अपने उपभोग के लिए आवश्यक परिणाम से अधिक उत्पादन तो कर सकता है, लेकिन समाज द्वारा उत्पादित कुल सम्पत्ति समाज के प्रत्येक सदस्य के लिए सुखी जीवन की दृष्टि से अपर्याप्त रहती है, ऐसी स्थिति में यह तार्किक है कि शोषकों का छोटा सा अल्पसंख्य वर्ग शोषितों के बहुसंख्यक वर्ग द्वारा उत्पादित अतिरिक्त पूंजी को ग्रहण कर ले। अतिरिक्त पूंजी अर्थात् ऐसी सम्पत्ति जो उत्पादकों की अपनी आवश्यक आवश्यकता को पूरा करने के बाद शेष रह जाती है, यही वर्ग संघर्ष का आधार बनती है। लेकिन वर्ग विभाजित समाज को वर्ग विहीन समाज में परिवर्ति करना आसान कार्य नहीं होता।
डॉ0 लोहिया समाजवाद के स्थापनार्थ वर्ग समाप्ति की अपरिहार्यता स्पष्ट की और वर्ग विहीनता के लिए विभिन्न प्रयत्नों को क्रियात्मक रूप प्रदान किया। डा0 लोहिया गांधी जी की कल्पना का समाजवाद लाना चाहते थे। डा0 लोहिया गांधी जी की अहिन्सा पर आधारित संघर्ष का प्रयोग दलितों एवं समाज के उपेक्षित लोगों के हाथ में सत्ता देने के पक्ष में थे। पंडित नेहरू ने जहा इसे सतही रूप में देखने का प्रयास किया वहा डा0 लोहिया भारतीय भूमि पर उसकी सामाजिक वास्तविकता के अनुरूप उसकी व्याख्या प्रस्तुत की। यह भारतीय समाज को समझने और व्याख्यायित करने की डा0 लोहिया की विलक्षण प्रतिभा की परिचायक है।

मूल शब्दः वर्ग विहीन समाज, समाजवाद, विशेषाधिकार, भारतीय समाज, भारतीय संस्कृति

प्रस्तावना

प्रत्येक समाजवादी वर्ग विहीन समाज की परिकल्पना करता है। वर्गों में समाज का विभाजन और विभिन्न वर्गों के बीच चलने वाला सतत संघर्ष ऐसे स्तर पर चला गया था कि प्रत्येक उत्पादक अपने उपभोग के लिए आवश्यक परिणाम से अधिक उत्पादन तो कर सकता है, लेकिन समाज द्वारा उत्पादित कुल सम्पत्ति समाज के प्रत्येक सदस्य के लिए सुखी जीवन की दृष्टि से अपर्याप्त रहती है, ऐसी स्थिति में यह तार्किक है कि शोषकों का छोटा सा अल्पसंख्य वर्ग शोषितों के बहुसंख्यक वर्ग द्वारा उत्पादित अतिरिक्त पूंजी को ग्रहण कर ले। अतिरिक्त पूंजी अर्थात् ऐसी सम्पत्ति जो उत्पादकों की अपनी आवश्यक आवश्यकता को पूरा करने के बाद शेष रह जाती है, यही वर्ग संघर्ष का आधार बनती है। लेकिन वर्ग विभाजित समाज को वर्ग विहीन समाज में परिवर्ति करना आसान कार्य नहीं होता। पुराने शोषित वर्गों के अवशिष्ट भागों द्वारा इसका उग्र प्रतिकार होता है। जमींदार, पूंजीपति तथा अन्य विशेषाधिकार प्राप्त वर्गों में रहते हुए व्यक्ति शोषण की व्यवस्था का अन्त करने के लिए प्रयत्नशील तत्त्वों के विरूद्ध हर प्रकार के संघर्ष को संगठित करते हैं। इस तरह वर्ग संघर्ष शोषितों द्वारा समाज पर अपना प्रभाव बनाये रखने के लिए वर्ग संघर्ष उग्र रूप ग्रहण कर लेता है। पंडित नेहरू के सम्बन्ध में जहां तक अन्य विचारकों का मत है कि उनकी दृष्टि में पंडित नेहरू कभी भी मार्क्सवादी नहीं रहे हैं और न उन्होंने कभी उग्र समाजवाद का पक्षपोषण किया। यदि पंडित नेहरू में समाजवाद से सम्बन्धित कुछ तत्त्व पाये भी जाते हैं तो वह उदारवादी समाजवाद के तत्त्व हैं। जो पंडित नेहरू के समय में ब्रिटिश परिवेश में पनप रहा था, जिसमें वर्ग संघर्ष नहीं वर्ग सहयोग को आधार माना जाता था। अतएव उनमें वर्गों से सम्बन्धित संघर्ष के तत्त्वों का अभाव था।

पंडित नेहरू वर्ग उन्मूलन के लिए तथा समाजवादी आधार पर समाज निर्माण के लिए आर्थिक सम्पन्नता को अनिवार्य मानते थे। पंडित नेहरू के शब्दों में ''यदि समाज में आर्थिक सम्पन्नता की स्थिति पैदा कर दी जाय तो वर्ग स्वतः समाप्त हो जायेंगे। लेकिन वर्ग उन्मूलन के सम्बन्ध में उन्होंने कोई स्पष्ट विवेचना नहीं की। वह प्रत्येक समस्या का निराकरण विधि के माध्यम से करना चाहते थे।[1]
डॉ0लोहिया के मत अनुसार तीन विशेषाधिकारों से चार वर्गों का निर्माण होता है–

1. प्रथम श्रेणी में शासक वर्ग
2. द्वितीय श्रेणी में उच्च मध्यम वर्ग
3. तृतीय श्रेणी में निम्न मध्यम वर्ग
4. चतुर्थ श्रेणी में सर्वहारा वर्ग।

डॉ0 लोहिया के विचारानुसार शासक वर्ग में वे व्यक्ति आते हैं जिनको जाति, सम्पत्ति और भाषा के अधिकार प्राप्त होते हैं। डॉ0 लोहिया के अनुसार, ''हिन्दुस्तान के शासक वर्ग को समझने में तीन बाते महत्व की हैं एक धनी अर्थात् करोड़पति ही नहीं अच्छे खाते पीते मध्यम वर्गीय लोग, दूसरे अंग्रेजी पढ़े लिखे लोग और तीसरे उच्च जाति वाले। [2]
डॉ0लोहिया के उपर्युक्त मत के अनुसार तीन विशेषाधिकारों से चार वर्गो का निर्माण होता है–

1. शासक वर्ग।
2. उच्च मध्यम वर्ग।
3. निम्न मध्यम वर्ग।
4. सर्वहारा वर्ग।

डॉ0 लोहिया के अनुसार शासक वर्ग में वे आते हैं जिनको जाति, सम्पत्ति एवं भाषा का विशेषाधिकार प्राप्त है। डॉ0 लोहिया के अनुसार हिन्दुस्तान के शासक वर्ग को समझने के लिए तीन बाते महत्वपूर्ण हैं एक वह धनी अर्थात करोड़पति ही नहीं अच्छे खाते पीते मध्यम वर्गीय लोग, दूसरा अंग्रेजी पढ़े लिखे लोग तथा तीसरा उच्च जाति वाले। डॉ0 लोहिया के अनुसार शासक वर्ग बिना किसी प्रयास के समाज का लाभ उठाता है और विलासितापूर्ण जीवन बिताता है। देश के विविध योजना और प्रशासन का रूझान इसी वर्ग की मनोकामना और आवश्यकता की पूर्ति में लगा रहता है। अपनी व्यथा के कारण साधारण आदमी में डर व्याप्त हो गया है वह अच्छे कपड़े पहनने वाले से डरा हुआ है, अंग्रेजी बोलने वाले से डरा हुआ है। डॉ0 लोहिया के विचार आज भी जीवन्त हैं। आज भी जनसाधारण पुलिस से डरती है।

द्वितीय श्रेणी या उच्च मध्यम वर्ग में ऐसे व्यक्ति हैं जिसमें अंग्रेजी भाषा और सम्पत्ति उच्च वर्ग के दो ही गुण पाये जाते हैं। इस वर्ग का व्यक्ति शासक वर्ग में सम्मिलित नहीं होता है। कुछ वर्षो के लगातार प्रयास से वह शासक वर्ग में प्रवेश पा जाता है।

तृतीय श्रेणी अथवा निम्न मध्यम वर्ग में ऐसे व्यक्ति आते हैं जिसमें केवल एक ही गुण होता है उच्च जाति। इस वर्ग को अपने विकास की अथवा आगे बढ़ने की कोई आज्ञा नहीं है। इनके प्रयत्न निष्फल होते हैं। जन्म ब्राह्मण अथवा उच्च वर्ग में क्यों न हुआ हो ऐसा व्यक्ति आने वाली पीढी को अच्छी शिक्षा नहीं दिला सकता।

डॉ0लोहिया के अनुसार चतुर्थ श्रेणी अथवा विशुद्ध सर्वहारा वर्ग में तीनों गुणों में से एक भी गुण विद्यमान नहीं है न सम्पत्ति न जाति न भाषा सम्बन्धी विशेषाधिकार। इस वर्ग का व्यक्ति ऊपर उठने की आशा नहीं कर रख सकता। जब सर्वहारा वर्ग समाजवाद के सन्दर्भ में सुनता है। तो उसे काल्पनिक विचार प्रयोग प्रतीत होता है। अतएव विधि योजना और राजनीति के कार्यक्रम के औचित्य को सर्वहारा के उत्थान की कसौटी पर कसा जाना चाहिए था।

डॉ0लोहिया इस सम्बन्ध में भी वर्ग निर्माण के तत्वों की स्पष्ट रूप से व्याख्या की है। अगर इन तत्वों और आधारों का उन्मूलन कर दिया जाय तो वर्ग उन्मूलन के उद्देश्य को सरलता से प्राप्त किया जा सकता है। डॉ0 लोहिया ने विशेषाधिकार सम्बन्धी भाषा जाति तथा सम्पत्ति की समाप्ति पर भी अपने विचार उन्मुक्त रूप से व्यक्त किये। भाषा सम्बन्धी विशेषाधिकार के सम्बन्ध में इसकी समाप्ति करने के लिए डॉ0 लोहिया ने अत्यधिक प्रयास किये। उनका विश्वास था कि लोक भाषा के बिना लोक तंत्रा की प्रति स्थापना नहीं हो सकती है और अंग्रेजी से अनभिज्ञ पद दलित वर्ग का विकास किया जा सकता है। डॉ0 लोहिया ने ''अंग्रेजी हटाओं'' अभियान पर सर्वाधिक बल दिया। अंग्रेजी हटाओं' प्रतिज्ञा पत्रा के शब्द उनकी सांस्कृतिक समानता अथवा सांस्कृति वर्ग अथवा वर्ग उन्मूलन की इच्छा प्रकट करते हैं। मैं चाहता हूँ कि अंग्रेजी का सार्वजनिक प्रयोग तत्काल बन्द कर देना चाहिए। विधायिकाओं, सरकारी कार्यालयों, न्यायालयों, दैनिक समाचार पत्राों और नामपट्टिकाओं पर अंग्रेजी का प्रयोग बन्द कर देना चाहिए और अंग्रेजी की अनिवार्य पढ़ाई बन्द कर देनी चाहिए।[3] अंग्रेजी प्रयोग की समाप्ति के लिए न्यायालयों में डॉ0 लोहिया की बहस सर्वविदित है।

जाति पर आधारित विशेषाधिकार प्राप्त वर्गो की समाप्ति के लिए अथवा जाति आधारित ऊंच नीच की भावना की समाप्ति के लिए डॉ0लोहिया आजीवन संघर्षरत रहे। डॉ0 लोहिया ने भारतीय संस्कृति, इतिहास और परम्पराओं की भूमि पर मार्क्स के वर्ग संघर्ष के सिद्धान्त को वर्ग संघर्ष में संशोधित कर दिया।[4]

डॉ0 लोहिया ने जाति प्रथा पर गहरा प्रहार करते हुए कहा कि हिन्दुस्तान में बुर्जुवा वर्ग ने दीन हीन भावना के लहराते हुए समुद्र को सोखने के लिए अगस्त्य ऋषि का कार्य किया है। उनके मत में निम्न जातियों को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक ढंग से सशक्त बना कर जाति पर आधारित वर्गों को विनष्ट किया जा सकता है। जाति प्रथा का अन्त किये बिना समाजवाद की स्थापना नहीं की जा सकती। डॉ0 लोहिया के अनुसार, ''जो आदमी हिन्दुस्तान की जाति प्रथा को अपने दिमाग में नहीं रखेगा, जोकि एक वस्तु स्थिति है, एक खास बात है और हर एक चीज के लिए वह एक नींव है वह कभी भी पूंजीवादी समाज के चक्कर को नहीं समझ पायेगा।[5] डॉ0 लोहिया के मतानुसार समाजवाद की स्थापना के लिए सार्वजनिक क्षेत्रा के पदाधिकारियों के विलासितापूर्ण जीवन का दमन करना उतना ही अनिवार्य है जितना कि निजी क्षेत्रा के पूंजीपति का दमन करना। इस प्रकार डॉ0 लोहिया ने आर्थिक विषमता को समाप्त करने का अथक प्रयास किया। इस हेतु उन्होंने कुछ बेस नीतियां रखी थीं। आय समता के लिए उन्होंने 1:10 का अनुपात निश्चित किया है और इस प्रकार शोषण रहित मूल्य नीति का भी निर्धारण किया। डॉ0 लोहिया सम्पत्ति पर आधारित वर्गों की नहीं अपितु सांस्कृतिक और सामाजिक तत्वों पर आधारित वर्गों की भी विशद व्याख्या की और उनके उन्मूलन के लिए प्रयास भी किया। इसके अतिरिक्त डॉ0 लोहिया ने स्थानीय वर्गों की ओर संकेत किया। इस सम्बन्ध में उनका मत है कि बड़े पूंजीपतियों के शोषण के विरूद्ध पर्याप्त काम भले ही न हो किन्तु शिकायत तो है। लेकिन किसी स्थान विशेष पर शक्तिशाली और कमजोर के मध्य होने वाले शोषण के विरूद्ध न तो कोई शोर गुल है और न कोई शिकायत ही है। भारी किराया लेने वाले दुकानदार और महाजन तथा कर्ज लेने वाले कारीगर, जमींदार और खेतिहर, उपभोक्ता और सरकार तथा व्यापारी एवं पुलिस और जनता आपसी शोषण युक्त सम्बन्धों को आम जनता के समक्ष रखा जाना चाहिए। इस सम्बन्ध में सुधार लाने के लिए संगठन बनाकर आन्दोलन चलाया जाना चाहिए। डॉ0 लोहिया समाजवाद के स्थापनार्थ वर्ग समाप्ति की अपरिहार्यता स्पष्ट की और वर्ग विहीनता के लिए विभिन्न प्रयत्नों को क्रियात्मक रूप प्रदान किया। डा0 लोहिया गांधी जी की कल्पना का समाजवाद लाना चाहते थे। डा0 लोहिया गांधी जी की अहिन्सा पर आधारित संघर्ष का प्रयोग दलितों एवं समाज के उपेक्षित लोगों के हाथ में सत्ता देने के पक्ष में थे। डा0 लोहिया की दृष्टि में समाज में वर्ग संघर्ष ही नहीं जाति संधर्ष और धर्म संघर्ष भी था। वे उच्च जाति और समान्तों के इतने विरूद्ध थे कि उनको संघर्ष में सम्मिलित नहीं करना चाहते थे। प्रस्तुत पंडित नेहरू अपने समाजवाद को राज्य की विधियो के माध्यम से एवं आपसी सहयोग के माध्यम से व्यवहारिक स्वरूप प्रदान करना चाहते थे।[6] पंडित नेहरू उतने आक्रमक नही थे जितना डा0 लोहिय थे। पंडित नेहरू ने जहा इसे सतही रूप में देखने का प्रयास किया वहा डा0 लोहिया भारतीय भूमि पर उसकी सामाजिक वास्तविकता के अनुरूप उसकी व्याख्या प्रस्तुत की। यह भारतीय समाज को समझने और व्याख्यायित करने की डा0 लोहिया की विलक्षण प्रतिभा की परिचायक है।

पंडित नेहरू कभी भी मार्क्सवादी नहीं रहे हैं। वह उग्र समाजवादी भी नहीं रहे हैं। पंडित नेहरू में समाजवाद के जो तत्व पाये जाते हैं वह उदार समाजवाद के तत्व हैं पंडित नेहरू के समकालीन ब्रिटिश परिवेश में वर्ग संघर्ष के स्थान पर वर्ग सहयोग की सामाजिक उद्भावना परिव्याप्त थी। नैसर्गिक रूप से पंडित नेहरू के समाजवादी चिन्तन में वर्ग संघर्ष के तत्व का अभाव था।

पंडित नेहरू वर्ग उन्नमूलन के लिए तथा समाजवादी आचार पर समाज के निर्माण के लिए आर्थिक सम्पन्नता को अनिवार्य मानते थे। पंडित नेहरू के अनुसार ''यदि समाज में आर्थिक सम्पन्नता की स्थिति पैदा कर दी जाय तो वर्ग स्वतः समाप्त हो जायेगे परन्तु वर्ग उन्नमुलन के सन्दर्भ में कोई स्पष्ट विवेचना प्रस्तुत नहीं की। पंडित नेहरू प्रत्येक समस्या का समाधान या निराकरण विधि के माध्यम से करना चाहते थे।

पंडित नेहरू के विपरीत डॉ0लोहिया ने वर्ग निर्माण के तत्वों की स्पष्ट व्याख्या प्रस्तुत की। डॉ0 लोहिया के अनुसार यदि इन तत्वों और आधारों के उन्नमुलन के उद्देश्य को सरलता से प्राप्त किया जा सकता है।

डॉ0 लोहिया ने विशेषाधिकार सम्बन्धी भाषा जाति तथा सम्पत्ति के समाप्ति पर भी अपने विचार उन्नमुक्त रूप से प्रस्तुत किये।

भाषा सम्बन्धी विशेषाधिकार की समाप्ति के लिए डॉ0लोहिया ने अत्यधिक प्रयास किया। डॉ0 लोहिया के अनुसार लोक भाषा के बिना लोकतंत्र की स्थापना नहीं हो सकती है। डॉ0 लोहिया ने अंग्रेजी हटाओं आन्दोलन पर सार्वाधिक बल दिया। अंग्रेजी हटाओं प्रतिज्ञा पत्रा के शब्द उनकी सांस्कृतिक समानता और वर्ग उन्नमूलन की इच्छा को प्रकट करते हैं। डॉ0 लोहिया के अनुसार मै चाहता हूँ कि अंग्रेजी का सार्वजनिक प्रयोग तत्काल बन्द कर दिया जाय।

डॉ0लोहिया जाति पर आधारित विशेषाधिकार के लिए आजीवन संषर्घरत रहे। डॉ0 लोहिया ने भारतीय संस्कृति इतिहास और परम्पराओं की भूमि पर मार्क्स के वर्ग के इतिहास के सिद्धान्त को संशोधित कर दिया।

वर्ग उन्नमूलन के लिए डॉ0लोहिया ने आय में समता की स्थापना के लिए 1:10 के अनुपात सुनिश्चित किया। डॉ0 लोहिया सम्पत्ति पर आधारित वर्गो के अतिरिक्त सामाजिक और सांस्कृतिक वर्गों के उन्नमुलन के सन्दर्भ में अपना विचार प्रस्तुत किया। इस क्रम में डॉ0 लोहिया सहभोज, अन्तरजातीय विवाह, आय असमानता को निर्धारित करने तथा पिछड़ो के लिए विशेष अवसर के सिद्धान्त की अवधारणा प्रस्तुत की।

पंडित नेहरू इतने आक्रामक नहीं थे जितने डॉ0लोहिया। पंडित नेहरू ने जहां इसे सतही रूप में देखने का प्रयास किया वहां डॉ0 लोहिया भारतीय भूमि पर उसकी सामाजिक वास्तविकता के अनुरूप उसकी शास्त्रीय व्याख्या प्रस्तुत की। यह भारतीय समाज को समझने और व्याख्यायित करने की डॉ0 लोहिया की विलक्षण प्रतिभा का परिचायक है।

संदर्भ सूची

1. नेहरू स्पीचेज, वाल्यम 2, 1949–1953 सूचना प्रसारण मंत्राालय प्रकाशन डिवीजन नई दिल्ली 1954 पृष्ठ संख्या 323।
2. डॉ0 लोहिया का भाषण, 19 जुलाई सन् 1969 हैदराबाद समाजवादी बुलेटिन नवम्बर 2003 पृष्ठ संख्या –5।
3. भाषाः डा0 राम मनोहर लोहिया, नव हिन्द प्रकाशन, हैदराबाद, हैदराबाद 1964। पृष्ठ संख्या 75–76।
4. हिन्दी विश्वकोश, खण्ड 10 नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी, संवत 2025। पृष्ठ संख्या 33 एवं 336।
5. समाजवाद की अर्थ नीतिः डॉ0 राम मनोहर लोहिया, नव हिन्द प्रकाशन, हैदराबाद, 1968। पृष्ठ संख्या 4 ।
6. सम्पूर्ण क्रान्ति के सूत्राधार लोक नायक जय प्रकाश नारायणः अवधबिहारी लाल, नव भारत टाइम्स प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1970। पृष्ठ संख्या 115।